Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 5, July-2018, ISSN 2230-7540

हरिशंकर आदेश की सप्तशतियों में प्रकृति-चित्रण

Updesh Devi*

Assistant Professor of Hindi, Guru College of Education, Mohindergarh

सार – ***प्रकृति अनादिकाल से मानव की सहचरी रही है वर्तमान में भी है एवं अनन्त काल तक मानव एवं प्रकृति का अन्योन्याभय सम्बन्ध अविराम गति से चलता रहेगा। साहित्य समाज का दर्पण है। काव्य साहित्य का संकुचित रूप है जो मानव की सर्जना है। काव्य का सामान्य अर्थ कविता होता है साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने काव्य को परिभाषित करते हुए लिखा है -***

वाक्य रसात्मकं काव्यम् ।[12]

अर्थात् रसमय वाक्य को ही काव्य कहते हैं। जिसके अध्ययन या श्रवण से अथवा अध्यापन से आनन्दानुभूति होती है। काव्य से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है। साधु काव्य कीर्ति एवं प्रीति दायक होता है।

----------X----------

परिचय

आचार्य विश्वनाथ ने चतुर वर्ग फल प्राप्ति का उल्लेख करते हुए लिखा है -

धम्भार्थकायमोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।

करोति कीर्ति प्रीतिभ्च साधुकाव्य निवेषणम् ।।[13]

अर्थात् काव्य चतुवर्ग फल प्राप्ति-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, कुशलता, कला, कीर्ति, प्रीति, काव्य अध्ययन से होती है। "साहित्य, संगीत, कला, विहीना, साक्षात पशु, पुंछ विषाण हीनः।।"

अर्थात् जिसको काव्य संगीत या कला का ज्ञान नहीं है। वह मानव नहीं पशु हैं। अन्तर इतना है कि इसके पूंछ और सींग नहीं है। किसी ने कहा है -

काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्

व्यसनेन कल हेलवा ।

अर्थात् बुद्धिमानों का समय काव्यशास्त्र के अध्ययन विनोद में व्यतीत होता है जबकि मूर्खों का समय (बुरी आदतों तथा लड़ाई झगड़े में व्यतीत होता है। काव्य कभी दुःखदायी नहीं होता सदैव सुखदायी होता है। डॉ. किरण कुमारी गुप्त ने मानव एवं प्रकृति के 'चिर-सहचरी' का उल्लेख करते हुए लिखा है -

आदिकाल के मानव ने जब चेतना उपलब्ध की तब उसने स्वयं को हिमाच्छादित उत्तुंग पर्वत श्रेणियों ने परिवृत्त पाया। आगाध जल-राशि का अवलोकन किया। सूर्य, चन्द्र और नक्षत्रों में अपनी नियति-गति द्वारा उसे विस्मित कर दिया, श्याम जलध-खण्ड और वसुधा की विभूति को देखकर वह चकित और आश्चर्यन्वित हो उठा।[14]

'जयशंकर प्रसाद' ने भी मनु की प्रकृति का यही रूप दिखाते हुए लिखा है -

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर

बैठ शिला की शीतल छाँह,

एक पुरुष, भीगे नयनों से,

देख रहा था प्रलय प्रवाह ।

नीचे जल था उपर हिम था,

[12] आचार्य विश्वनाथ, साहित्य दर्पण, पृ॰ 19

[13] वही, पृ॰ 3

[14] डॉ. किरण कुमारी गुप्त, हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण, पृ॰ 1

www.ignited.in

एक तरल था एक सधन;

एक तत्त्व की ही प्रधानता,

कहो उसे जड़ या चेतन ।[15]

सूर्य, मरूत, शून्य, धरित्री एवं निर्झणी, आदि सभी पंचभूतों को पृथक सत्ता है जो समयानुसार उन्हें भिन्न-भिन्न रूप प्रदान करती रहती है।

रामचरित्र मानस अर्थात् भूमि, जल, अग्नि, शून्य एवं वायु प्रकृति के प्रमुख पाँच तत्त्व हैं इन्हीं पांच तत्वों से मानव शरीर का एवं प्रकृति के विभिन्न उपादानों का निर्माण हुआ है। प्रकृति के विभिन्न अंग, सिन्धु, जलद, गिरि, सूर्य एवं पवमान आदि हैं। इनके अलावा चन्द्र, वृक्ष सागर, वायु आदि विभिन्न अंगों का उल्लेख करते हुए डॉ. किरण कुमारी गुप्ता ने उल्लेख करते हुए इन्द्र की महत्ती शक्ति का भी उल्लेख किया है ।

सिन्धु, जलद, गिरि, सूर्य, पवमान आदि अन्तर्निहित मांगलिक भावना का भी अनुभव किया है। जलद खण्डों ने अमृतोपम जल की वर्षा कर उसके जीवन दाता वृक्षों में नवजीवन का संचार किया, सूर्य ने जीवन के वा×छित उपकरणों का पोषण किया, रत्नाकार ने असंख्य रत्नों का उपहार दिया। चन्द्र ने अपनी चन्द्रिका के प्रसार से घनान्धकार का निराकरण किया। मरूत जीवन का साधन बन गया और धरित्री ने इन सभी का कृतित्व स्नेह पूर्वक धारण और वहन किया। वह प्रकृति के विभिन्न अंगों के मंगलमय कृत्यों द्वारा इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसने इस सभी में देवत्व की प्रतिष्ठा कर ली और क्रमशः इनको इन्द्र, सूर्य, वरूण, चन्द्र, वायु और पृथ्वी आदि दिव्य नाम देकर गुणगान करने लगा। उसने प्रथम इन्द्र की महत्ती शक्ति का -

यः पृथिवीं व्यथमानामदृहं

यः द्यौः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात् ।

यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो

यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः ।। ऋग्वेद 6/12/2

अर्थात् हे मनुष्यों जिसने चल पर्वतों को अचल करके कम्पित पृथ्वी को स्थिर किया, जिसने आकाश को सीमित कर गगन मण्डल को सम्भाला वहीं इन्द्र है।

ऋग्वेद अर्थात् वैदिक संस्कृति से लेकर आज तक अर्थात् आधुनिक काव्य तक प्रकृति किसी न किसी रूप में साहित्य में विद्यमान है।

सूर्य का उल्लेख ऋग्वेद में अन्यत्र भी किया गया है।

पूषन्तवं व्रते वयं न रिष्येम कदाचन ।

स्तोतारतस्य इह स्मसि ।।[16]

इसी प्रकार वायु एवं अग्नि तथा वरूण से सम्बन्धित सूक्त ऋग्वेद में मिलते हैं -

ये शुभ्रां घोरवर्पसः सुक्षत्रसोरिशादसः ।

मरूद्भिरग्न आ गाहि ।[17]

अर्थात् तेज पूर्ण और भयंकर आकृति वाले दृढ़ शासक अपने शत्रुओं का भक्षण करने वाले है अग्नि, मारूत, सहित पर्दापण करो। वरूण

स नो विश्वाहासुक्रतु रादित्यः सु पथ करत् ।

प्र ण आयुंषि तारिषत् ।।[18]

अर्थात् दृढ़ शासक अदिति पुत्र सुर्य सदा हमारे मार्ग दिदर्शक रहे और हमें चिरायु करें ।

वैदिक संस्कृति में प्रकृति के पंच भौतिक तत्वों क्षिति, जल, पावक, गगन एवं समीर का विस्तृत विवेचन मिलता है। मिश्र, वरूण, अदिति, सिन्धु, पृथ्वी, आकाश आदि को देवतातुल्य मानकर उनमें पूज्य-भाव एवं पूजा उपमान, नियति, नियन्ता एवं एकेश्वर रूप में वर्णन किया गया है।

डॉ. किरण कुमारी गुप्त के अनुसार सत्, रज, तम, गुणों की साम्यावास्था को ही प्रकृति कहा गया है -

प्रकृति में जब तक सत्, रज और तम की साम्यावस्था रही हैं तब तक उसको प्रकृति कहते हैं उनमें विषमता आने पर परिणामों का आरम्भ हो जाता है।[19]

[15] जयशंकर प्रसाद, कामायनी चिन्ता सर्ग, पृ॰ 3

[16] ऋग्वेद - 15/15/6

[17] ऋग्वेद - 1/19/1

[18] ऋग्वेद- 2/25/1

[19] डॉ. किरण कुमारी गुप्त, हिन्दी काव्य प्रकृति चित्रण, पृ॰ 7

www.ignited.in

प्रकृति के काव्य में आलम्बन, दुद्वदीपन, उपमेय, उपमान अलंकार एवं मानवीकरण के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

बालमीकि रामायण में अर्थात् लौकिक संस्कृति में प्रकृति के अनेक रूप का वर्णन दृष्टिगोचर होता है।

अवश्यायनिपातेन किंचित्प्रक्लिन्न शाद्वला ।

वनानां शोभते भूमिनिर्विष्ट तरूणातपा ।।[20]

काव्य और प्रकृति का सहज सम्बन्ध हैं प्रकृति के विस्तृत प्रांगण में विचरण करने वाले कवि ही अमर काव्य की रचना कर सके हैं। काव्य का मूल उद्देश्य सृष्टि के साथ मानव हृदय का रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करना है।

आदि कवि बाल्मीकि ने प्रथम श्लोक में क्रौंच पक्षी का करूणामय विवेचन किया है जिसके उपरान्त ही उन्होंने रामायण महाकाव्य का सृजन किया। निषाद को उसके कुकृत्य पर कोसते हुए उन्होंने लिखा है -

मां निषाद गमयः .....

बाल्मीकि

अर्थात् हे निषाद या बहेलिये तुम्हें सैंकड़ों वर्षों तक प्रतिष्ठा सम्मान या आदर न मिले क्योंकि तुमने काम में रतकौ×च पक्षी के जोड़े में से नर का वध कर दिया है। जो धाराशाही हो गया है और मादा उसके पास बैठी हुई उसके वियोग में तड़प रही है। प्रस्तुत श्लोक में नर के वध से इष्ट की अनिष्ट की और अनिष्ट की प्राप्ति होने से करूण रस का पूर्ण परिपाक हुआ है। कौ×च पक्षी का वर्णन प्राकृतिक चित्रण का अनुपम चित्रण किया गया है। वीरगाथाकाल में चन्दरबरदायी ने पृथ्वीराज रासों में अनेक स्थलों पर प्रकृति चित्रण किया है । भक्ति कालीन कवि गोस्वामी तुलसीदास सूरदास आदि ने प्रकृति का मनोरम चित्र उपस्थित किया है-

हे खग हे मृग मधुकर श्रेणी। तुम्हें देखी सीता मृगनैनी।

खजंन सुक कपोत मृग मीना। मधुपनिकर कोकिला प्रबीना।[21]

अर्थात् सीता के वियोग में सीता को ढूंढते हुए राम पशु-पक्षियों एवं भौरों की पक्तियों से पूछते हैं कि तुमने कहीं मृगनयनी सीता को देखा है। खजंन, तोता, कबूतर, हिंस, मछली, भौरों का समूह प्रवीण, कोयल, कुंद कली, अनार, बिजली, कमल, शरद का चन्द्रमा और नागनी, वरुण का पाश, कामदेव का धनुष, हंस, गज, सिंह ये सब आज अपनी प्रशंसा सुन रहे हैं। प्रकृति के विभिन्न उपादानों का चित्रण किया गया है। सूरदास ने प्रियतम के बिना रात को काली नागिन के समान कहा हैं -

पिय बिनु नागिनि कारी रात।

जो कहुं जामिनी उवति जुन्हैया, डसि उलटी हौ जात।।

जंत्र न फुरत मन्त्र नहिं लागत, प्रीति सिरानी जात ।

'सूर' स्याम बिनु विकल बिरहनि, मुरि मुरि लहरै खात।।[22]

अर्थात् प्रियतम के बिना रात काली नागिन हो गई है। रात्रि में चन्द्र का उदय होना ऐसा प्रतीत होता है मानव नागिन डसने के बाद उलट गई है। जन्त्र-मन्त्र सच्चे नहीं लगते हैं अर्थात् गारूणी का साडना फूकना बेकार हो जाता हैं क्योंकि प्रियतम के बिना प्रीत समाप्त होती जाती है कृष्ण के बिना गृहणी नायिका मुड़-मुड़कर साँसे लेती जाती है अर्थात् लहरों पर आती जाती है नागिन रात्रि चन्द्रमा का उद्य होना सर्पिणी के डसने के बाद उलट जाना लहरें खाना आदि रम्य प्राकृतिक दृश्य उपस्थित करते हैं।

अर्थात् मन्दोदरी के कंचुकी रहित कुच रास्ते हैं या सचमुच ही बेल फल शोभा दे रहे हैं या सुन्दर सोने के कलश वशीकरण चूर्ण से लबालब भरे हुए हैं। कुच को बेल का फल या सुन्दर सोने के कलश कहना प्रकृति को उपमान रूप में ग्रहण किया गया है। बिहारी ने गागर में सागर भरते हुए सोने और धतूरे का अनुपम रूप प्रस्तुत करते हुए लिखा है -

संदर्भिका

प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' - निर्मल सप्तशती - निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2001

प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' - आदेश सप्तशती - निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2001

[20] वाल्मीकि रामायण (अरण्यकाण्ड) सर्ग-16 श्लोक-20

[21] गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस अरण्यकाण्ड, पृ॰ 645

[22] सूरदास, सूरसागर खण्ड दो, पृ॰ 1310

प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' - जीवन सप्तशती - विशाल प्रकाशन, दिल्ली, 2002

महाकवि हरिशंकर 'आदेश' - जमुना सप्तशती - लक्ष्मी प्रकाशन, दिल्ली, 2003

प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' - विवेक सप्तशती - चंद्रा प्रकाशन, मुदादाबाद, 2004

प्रवासी महाकवि 'आदेश' - पत्नी सप्तशती - चंद्रा प्रकाशन, मुदादाबाद, 2004

गजानन मुक्तिबोध

(डॉ. राजपाल शर्मा) - चांद का मुंह टेढ़ा है - एक विवेचन - अमीता प्रकाशन, चरर्वे बालान दिल्ली, 1984

गुलाब राय - काव्य और कला तथा अन्य निबंध

जयशंकर प्रसाद - कामायनी - भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सं॰ 2010

गोस्वामी तुलसीदास - रामचरित मानस (बड़ा) - गीता प्रेस, गोरखपुर, सं॰ 2035

डॉ. देवराज - भारतीय संस्कृति (महाकाव्यों के आलोक में) - प्रकाशक, शशिकांत, सं॰ 1966

Corresponding Author

Updesh Devi*

Assistant Professor of Hindi, Guru College of Education, Mohindergarh

inderdongra@gmail.com